स्पिक मैके (सोसाइटी फॉर द प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एंड कल्चर अमंग यूथ) एक गैर-राजनीतिक, राष्ट्रव्यापी, स्वैच्छिक आंदोलन है, जिसकी स्थापना 1977 में आईआईटी-दिल्ली के प्रोफेसर एमेरिटस डॉ. किरण सेठ ने की थी, जिन्हें 2009 में कला में उनके योगदान के लिए 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया था। स्पिकमैके का इरादा भारतीय विरासत के विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूकता बढ़ाकर और युवा मन को इसमें निहित मूल्यों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करके औपचारिक शिक्षा की गुणवत्ता को समृद्ध करना है। यह भारतीय और विश्व विरासत के समृद्ध और विषम सांस्कृतिक टेपेस्ट्री में सन्निहित रहस्यवाद का अनुभव करने के माध्यम से युवाओं को प्रेरित करना चाहता है, इस आशा के साथ कि इन कलाओं में सन्निहित सुंदरता, अनुग्रह, मूल्य और ज्ञान उनके जीवन और सोच को प्रभावित करेंगे और एक बेहतर इंसान बनने के लिए प्रेरित करेंगे। इसके लिए, देश के सबसे कुशल कलाकार मुख्य रूप से स्कूलों और कॉलेजों में भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य, लोक, कविता, रंगमंच, पारंपरिक चित्रकारी, शिल्प और योग के कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं। 2011 में, स्पिक मैके को युवा विकास में योगदान के सम्मान में राजीव गांधी सद्भावना पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

केंद्रीय विद्यालयों में पिछले 10 वर्षों और उससे अधिक समय से SPICMACAY आयोजित किया जा रहा है। पूरे भारत में प्रसिद्ध कलाकार केंद्रीय विद्यालयों में प्रदर्शन में शामिल हुए हैं। शैक्षणिक वर्ष 2018-19 में स्पिकमैके ने जबलपुर क्षेत्र के सभी विद्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किए। सभी विद्यार्थियों, स्टाफ और अभिभावकों को कार्यक्रम देखने का अवसर मिला है। इन सभी कार्यक्रमों का आयोजन सैकड़ों स्वयंसेवकों द्वारा किया गया था जिनमें बड़े पैमाने पर छात्र, शिक्षक, गृहिणियां, सेवानिवृत्त लोग, पेशेवर, युवा और बुजुर्ग शामिल थे।

स्पिक मैके ने आज के युवाओं के सामने भारतीय शास्त्रीय कला रूपों को व्यापक तरीके से प्रस्तुत करने के लिए व्याख्यान-प्रदर्शन प्रारूप की शुरुआत की, जिसने उन्हें शास्त्रीय कला रूपों की मूल बातें की समझ दी है, और इस गलत धारणा को दूर किया है कि शास्त्रीय कलाओं को समझना मुश्किल है।

स्पिक मैके किसकी पुष्टि है:-

- एक अमूल्य सांस्कृतिक विरासत। स्पिक मैके शास्त्रीय कलाओं पर ध्यान केंद्रित करके उनके परिचर किंवदंतियों और दर्शन के माध्यम से हमारे देश के युवाओं के बीच समृद्ध और विषम सांस्कृतिक टेपेस्ट्री के बारे में जागरूकता को संरक्षित और बढ़ावा देना चाहता है और उनके गहरे और सूक्ष्म मूल्यों के बारे में जागरूकता की सुविधा प्रदान करता है।
- युवा लोगों की स्पंदित और गतिशील जीवन शक्ति। आंदोलन इस जीवन शक्ति को शामिल करता है ताकि उन्हें वास्तव में उनके जन्मसिद्ध अधिकार, अर्थात् उनकी विरासत, जड़ों और पहचान के संरक्षक होने के लिए प्रेरित किया जा सके। यह युवाओं में विचार और जांच की वास्तविक भावना को भड़काने का प्रयास करता है।
- एक ठोस मूल्य-आधारित शिक्षा, जिसमेः तेजी से तकनीकी, सांसारिक और प्रतिस्पर्धी दुनिया में सौंदर्यशास्त्र और आध्यात्मिकता का अवशोषण शामिल है। इस प्रकार इसका काम भावना और चरित्र में शैक्षिक है और बड़े पैमाने पर शैक्षणिक संस्थानों में स्थित है।
- सेवा भावना पैदा करने में स्वैच्छिक कार्य की प्रभावशीलता। वास्तव में, यह इस आंदोलन का छिपा हुआ एजेंडा है। स्वयंसेवक विभिन्न आकांक्षाओं और कौशल के साथ जीवन के सभी क्षेत्रों से आते हैं। वे अपना कुछ समय बड़े अच्छे और अपने तत्काल स्वार्थ के बाहर के कारण देते हैं। पदानुक्रम या औपचारिकता के बिना भागीदारी पर जोर दिया जाता है।